Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh-

कक्षा - दसवीं                                   विषय - हिन्दी साहित्य
                                                 शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या 82 पर दिए पाठ-6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे

बच्चो ! आज हम 'दीपदान' नामक एकांकी का आरंभ करने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक 'एकांकी संचय' निकाल लें एवं अपनी उत्तर-पुस्तिका भी निकाल लें तथा पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे एकांकी से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे जिनके उत्तर आप पाठ को समझकर व सुनकर ही दे पाएँगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

'दीपदान' एकांकी डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एक प्रसिद्ध एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी इतिहास की एक घटना पर आधारित है। इसमें एकांकीकार ने सोलहवीं शताब्दी की चितौड़ दुर्ग की ऐतिहासिक घटना को मर्मस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया है। चित्तौड़ की भूमि पूजनीय है। इसके

कण - कण में बलिदान की गाथा छिपी है। देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति और कर्त्तव्यपालन के लिए यहाँ एक से बढ़कर एक बलिदान हुए हैं। अनेक महापुरूषों ने इस धरती में जन्म लिया है। ऐसी ही वीरांगना पन्नाधाय का एकांकीकार ने इस एकांकी में वर्णन किया है। पन्नाधाय के माध्यम से लोगों में स्वामिभक्ति, वफ़ादारी, त्याग, देशभक्ति, वीरता, दूरदर्शिता आदि गुणों का विकास करना ही एकांकीकार का उद्देश्य है।

बच्चो ! अब एकांकी के पात्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। इस एकांकी के पात्रों में कुँवर उदयसिंह, पन्नाधाय, सोना, चंदन, सामली, बनवीर तथा कीरत हैं। आइए इनके बारे में संक्षेप में जानकारी प्राप्त करते हैं।

- पात्र - परिचय

**पन्नाधाय** - पन्नाधाय चित्तौड़ के महाराणा सांगा के छोटे पुत्र उदय सिंह की धाय और संरक्षिका है। पन्ना खीची जाति की राजपूतनी है। उसकी आयु तीस वर्ष है। पन्नाधाय एक स्वाभिमानी, वीर, कर्त्तव्यनिष्ठ, दूरदर्शी महिला है। वह एक ममतामयी माँ भी है। उसे किसी से भय नहीं लगता। वह बनवीर को उसके कुकृत्यों पर धिक्कारती है। बनवीर द्वारा लालच दिए जाने का वह स्पष्ट विरोध करती है। वह अपनी बौद्धिक क्षमता से कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करती है और कुँवर की रक्षा के लिए अपने इकलौते पुत्र की बलि चढ़ा देती है। इस प्रकार पन्नाधाय भारतीय इतिहास में सदैव के लिए अमर हो गई।

**कुँवर उदय सिंह** - कुँवर उदयसिंह 'दीपदान' एकांकी के प्रमुख पात्रों में से एक है। कुँवर चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा के सबसे छोटे पुत्र और चित्तौड़ साम्राज्य के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं। उनकी आयु केवल 14 वर्ष है।

उनके अवयस्क होने के कारण महाराणा विक्रमादित्य (कुँवर उदय सिंह के भाई) को राज-पाट सौंपा गया है। उनमें बालहठ है इसके अतिरिक्त उनकी रुचि गीत-संगीत में भी है।

सोना - सोना रावल सरूप सिंह की पुत्री है। वह अत्यन्त सुन्दर नटखट व कुशल नृत्यांगना है। उसके सौंदर्य व नृत्य को देखकर कुँवर उदय सिंह उसकी ओर आकर्षित होते हैं। सोना वाक्पटु (अत्यधिक बोलने वाली) महिला है। अतः सोना एक सोलह वर्षीय, अत्यन्त सुन्दर, नटखट और वाक्पटुता के गुणों से परिपूर्ण है।

चंदन - चंदन, पन्नाधाय का तेरह वर्षीय पुत्र है। उसमें बालपन है। वह अपनी माँ और कुँवर उदयसिंह से असीम प्रेम करता है। चन्दन एक स्नेहिल, प्यारा और साहसी बालक है जो एक खरगोश की तरह ज़मीन से आसमान तक दौड़ना चाहता है। उसकी त्यागमयी, कर्तव्य-निष्ठ माँ देशप्रेम की खातिर अपने ही पुत्र की बलि दे देती है।

सामली - सामली चित्तौड़ के अंतःपुर की 28 वर्षीय परिचारिका (सेविका) है। वह एक वफ़ादार तथा समझदार दासी है। वह राजमहल में घट रही हर घटना की जानकारी पन्ना तक पहुँचाती है। वह पन्नाधाय की विश्वासपात्र है। उसने कठिन समय में पन्ना धाय की मदद करके चित्तौड़ के उत्तराधिकारी उदयसिंह के जीवन की रक्षा की।

कीरत - कीरत राजमहल में जूठी पत्तलें उठाने वाला चालीस वर्षीय बारी है। वह एक वफ़ादार व विश्वासपात्र व्यक्ति है। वह बनवीर से कुँवर उदय सिंह के प्राणों की रक्षा करने की योजना के तहत सोते हुए कुँवर उदयसिंह को अपनी टोकरी में छिपाकर महल के बाहर ले जाता है। वह अपने प्राणों की परवाह भी नहीं करता। वह एक सच्चा देशभक्त है।

बनवीर - बनवीर मेवाड़ के महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज

का दासी पुत्र है। जिसकी आयु करीब बत्तीस (३२) वर्ष है। वह महत्त्वाकांक्षी, क्रूर और विलासी है। वह अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए दीपदान के उत्सव का आयोजन कर पहले महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर देता है और निष्कंटक (निर्विघ्न, आपत्ति आदि से रहित) राज्य के लिए कुँवर उदय सिंह को भी मारने जाता है। वह षड्यन्त्र से सैनिकों को भीअपनी ओर मिला देता है। वह सत्ता के नशे में अंधा है। वह कुँवर उदय सिंह की शैय्या पर सोते हुए चंदन का बड़ी बेरहमी व निर्दयता से वध कर देता है। अत: वह एक क्रूर, अत्याचारी और प्रपंचबुद्धि (छलकपट)वाला व्यक्ति है।

बच्चो! पात्र-परिचय जानने के बाद अब एकांकी को पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं।

दीपदान की कथावस्तु सन् 1536 ईसवी में राजस्थान के चित्तौड़ दुर्ग में घटित राजपूतों की कहानी है। कुँवर उदयसिंह का कक्ष (कमरा) है। रात्रि का दूसरा पहर है। पूरी सजावट है। दरवाज़ों पर रेशमी परदे पड़े हैं। नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य ध्वनि और सम्मिलित गान सुनाई पड़ रहा है जो धीरे-धीरे हल्का हो रहा है। पूरा महल रास रंग में डूबा हुआ है। उदय सिंह आकर पन्ना धाय को बताता है कि दासी पुत्र बनवीर द्वारा नगर में एक उत्सव का आयोजन रखा गया है जिसमें नृत्यागनाएँ तुलजा भवानी के सामने नृत्य कर रही हैं। पूरा महल रास रंग में डूबा हुआ है। उदय सिंह पन्ना धाय को तुलजा भवानी के सम्मुख सुन्दर-सुन्दर लड़कियों को दीप अर्पण करते हुए उनका नृत्य देखने के लिए कहते हैं और साथ चलने की ज़िद करते हैं। धाय माँ उन्हें जाने से मना कर देती हैं और उन्हें अपनी तलवार म्यान में रखने को कहती हैं। पन्ना को यह सब अच्छा नहीं लग रहा है। इसलिए वह

वहाँ नहीं जाना चाहती है। पन्ना उदय सिंह से कहती है कि तुम बहुत अच्छे हो, महाराणा साँगा के छोटे कुँवर हो। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है तभी तो तुम्हारा नाम उदय सिंह रखा गया है। तुम महाराणा साँगा के कुल दीपक हो। अर्थात् जिस प्रकार सूरज अपने प्रकाश से पूरे संसार को प्रकाशित कर देता है, उसी प्रकार कुँवर उदय सिंह जब दिन में चित्तौड़ की भूमि पर खेलते-खाते, घूमते-फिरते हैं, सबसे मिलते-जुलते हैं और दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं तब चित्तौड़ वासियों के हृदय में अपने भावी राजा को देखकर उम्मीदों और खुशियों की किरणें फूटती हैं। और रात में कुँवर राजवंश के दीपक हैं जिस प्रकार दीपक रात के अंधकार को दूर कर देता है उसी तरह चित्तौड़ के राजवंश पर जो बनवीर रूपी अंधकार मँडरा रहा है। वह कुँवर के बालिग होने पर राजा बनने के बाद स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। यही आज भी राजवंश के सुरक्षित भविष्य को प्रकाशित कर रही है। कुँवर के राजा बनने के बाद बनवीर की कोई कूटनीति नहीं चल सकती। 'राजवंश के दीपक' शब्दों को सुनकर उदयसिंह एकदम बोल पड़े कि कहीं तुम मुझे दान न कर देना क्योंकि नृत्यांगनाएँ तुलजा भवानी की पूजा में दीप-दान करके ही नाच रही थीं। कुँवर धाय माँ से पुनः दीपदान देखने चलने के लिए कहते हैं तब पन्ना साफ़ मना करते हुए कहती है कि मैं इस समय कुछ नहीं देखूँगी। पन्ना की यह बात सुनकर कुँवर रूठ गए और कहते हैं कि मैं भी नहीं देखूँगा। मैं उदयसिंह भी नहीं बनूँगा और कुल दीपक भी नहीं बनूँगा। कुछ नहीं बनूँगा। पन्ना, उदयसिंह से कहती है कि रूठने से राजवंश नहीं चलते। तुम सारा दिन तलवार का खेल-खेलकर थक गए होंगे। अपनी शैया पर जाकर सो जाओ। मैं तुम्हारी तलवार संभाल कर रख दूँगी। उदय सिंह इस ज़िद

में कि धाय माँ ने उनकी बात नही मानी और कहते हैं कि तब तो मैं तलवार के साथ ही सो जाऊँगा। पन्ना उदयसिंह को समझाती है कि अभी वह समय नहीं आया। चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें कई दिनों तक तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा अर्थात् जब तुम राजवंश संभालोगे तो तुम्हें चित्तौड़ की रक्षा के लिए तलवार को पास रखकर ही सोना पड़ेगा। पता नहीं कब शत्रु तुम पर आक्रमण कर दे अतः शत्रुओं का सामना करने के लिए तुम्हें दिन-रात अपनी तलवार के साथ ही तैयार रहना पड़ेगा।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप तीन मिनट के अन्तर्गत ही पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. पन्ना कौन है ?

प्रश्न 2. कौन, किसको रात में अकेले जाने से मना कर रहा है ?

प्रश्न 3. कौन रूठ गया और क्यों ?

बच्चो ! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. पन्ना चित्तौड़ के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी और महाराणा साँगा के पुत्र कुँवर उदयसिंह की धाय थी।

उत्तर 2. पन्नाधाय कुँवर उदयसिंह को दीपदान उत्सव रात में अकेले देखने जाने से मना कर रही है।

उत्तर 3. कुँवर उदयसिंह रूठ गए। वे पन्ना धाय से बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव में जाने और वहाँ चल रहे नृत्य को देखने के लिए कहता है लेकिन पन्ना उसे यह कहकर कि उसका वहाँ

जाने का मन नही है, मना कर देती हैं।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए इसे पढ़ने व समझने का प्रयास करते हैं। जब उदयसिंह पन्ना से पूछते हैं कि तुम्हें तलवार से डर लगता है जो बार-बार तलवार को रखने की बात कह रही हो तब पन्ना धाय उदयसिंह को समझाती हैं कि चित्तौड़ एक ऐसा राज्य है जहाँ तलवार से कोई नहीं डरता। जिस प्रकार लता में प्राकृतिक रूप से फूल खिलते हैं, उसी प्रकार वीरों के हाथों में तलवार खिलती है। तलवार चित्तौड़ के वीरों के शरीर का ही भाग है। यह सुनकर उदय सिंह को लगता है कि पन्ना ऐसा कहकर उनका मन बहलाना चाह रही है इसलिए वे कहते हैं कि यदि तुम नाच देखने नहीं जाओगी तो वे अकेले ही चले जाएँगे और जाने के लिए तैयार होते हैं. लेकिन पन्ना रात में उदयसिंह को अकेले जाने से रोक देती है। उसका मानना है कि कुँवर के कई शत्रु हैं, जिनके कारण कुँवर सुरक्षित नहीं हैं। वे मौका पाते ही कुँवर को डसने अर्थात् हानि पहुँचाने का प्रयास कर सकते हैं। पन्ना जब उन्हें सो जाने के लिए कहती है तब उदयसिंह रूठ कर बिना भोजन किए ही तलवार लेकर ज़मीन पर ही सो जाते हैं। पन्ना अब स्वयं से ही कहती है कि उसे कुँवर का रूठना अच्छा लगता है, मैं उन्हें मना लूँगी। पन्ना कहती है कि चित्तौड़ जो वीर योद्धाओं का गढ़ कहलाता है आज इस धरती पर नाच गान का उत्सव मनाया जा रहा है। इस से चित्तौड़ की रक्षा कैसे होगी अर्थात् पन्ना चित्तौड़ के भविष्य को लेकर चिंतित है। बनवीर जो एक लोभी, भोगी, षड़यन्त्रकारी और विश्वासघाती चरित्र का व्यक्ति है। यदि ऐसे दुश्चरित्र वाले व्यक्ति चित्तौड़ पर शासन करेंगे तो नगर में अव्यवस्था का होना स्वाभाविक है।

बच्चो ! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं समाप्त करते हैं। आशा करती हूँ कि आज हमने जितना भी पढ़ा है आपको समझ में आ गया होगा। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 85 ( पच्चासी ) तक पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे ।

गृहकार्य

- निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"धाय माँ, देखो न कितनी सुंदर - सुंदर लड़कियाँ नाच रही हैं। गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो न! देखो न !

प्रश्न (i) वक्ता एवं श्रोता कौन - कौन है ? परिचय दीजिए।
प्रश्न (ii) धाय माँ कौन है ? उसका परिचय दीजिए।
प्रश्न (iii) सुंदर - सुंदर लड़कियाँ कहाँ नाच रही थी और क्यों ?
प्रश्न (iv) धाय माँ लड़कियों का नृत्य देखने क्यों नहीं जाना चाहती थी ?

धन्यवाद ।

[अंतिम पृष्ठ]